शोध पत्र-

राजा राम मोहन राय का राजनीतिक क्षेत्र में योगदान

* मंजू कुमारी

* Vill. Majra Bahlkhi, P.O. Kund, Distt. Rewari (Haryana)

राजा राममोहन राय मूलतः धार्मिक और समाज सुधारक थे। राज्य क्या है, राज्य की उन्नति कैसे हुई, व्यक्ति और राज्य का क्या सम्बन्ध है, राज्य का कार्यक्षेत्र क्या हो, जैसे आधारभूत राजनीतिक प्रश्नों के प्रति उनके कोई विशेष विचार थे। राजा राममोहन राय स्वतन्त्रता के पक्षधर थ। उन्होंने अपने घनिष्ठ मित्र विलियम एडम को स्वतन्त्रता सम्बंधी अपनी धारणा के विषय में लिखा हैं वे स्वतन्त्र रहेंगे या जीवित रहना ही नहीं चाहेंगे उनकी आत्मा की सबसे बड़ी चाह भी स्वतन्त्रता थी। वे व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के समर्थक थे और यह नहीं चाहते थे कि कोई उनकी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता में हस्तक्षेप करे, पर वे दूसरों के अधिकारों की रक्षा के लिए भी सजग रहते थे, उन लोगों के अधिकारों की रक्षा के लिए भी जिनका उनसे मतभेद था।

राजा राममोहन राय का आर्विभाव ऐसे समय में हुआ जब भारतीय समाज पतन की अवस्था में था। मुगल साम्राज्य बिखर रहा था। हिन्दू और मूसलमानों में आपसी वैमनस्य था। आम जनता अंग्रेजी शासन की स्थापना का मूक समर्थन कर रही थी। राजा राममोहन राय जब कलकत्ता में अंग्रेजों के सम्पर्क में आए तो वे पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति और विचारों से बड़े प्रभावित हुए। उनका यह विश्वास दृढ़ होता चला गया कि अंग्रेजों के सम्पर्क से ही भारत की उन्नति हो सकती है।

वे भारत के लिए अंग्रेजी शासन को जरूरी समझते थे। 6 जुलाई 1931 को ईस्ट इण्डिया कम्पनी के कुछ अधिकारियों द्वारा लंदन में राजा राममोहन राय के सम्मान में रात्रि भोज का आयोजन किया था। इस अवसर पर राजा राममोहन राय ने अपने भाषण में कहा था कि भारत में अंग्रेजी शासन की स्थापना से पूर्व लड़ाई–झगड़े होते रहते थे, लूट–मार मची रहती थी, जान–माल की कोई सुरक्षा नहीं थी। अंग्रेजी शासन ने उन लड़ाई झगड़ो को रोककर शिक्षा का प्रसार कर देश में शान्ति स्थापित की है।

राजा राममोहन राय आरम्भ में अंग्रेजों के प्रति घृणा भाव रखते थे किन्तु बाद में जब उन्होंने ब्रिटेन के कानून और शासन प्रणाली का अध्ययन किया तब वे उनके समर्थक बन गए। यद्यपि अंग्रेजों का शासन विदेशियों का शासन था फिर भी वह भारत के लिए हितकारी था। राजा राम मोहन राय भारत के राजनैतिक पतन का कारण समाज की आंतरिक दुर्बलताओं को मानते है। उन्होंने 1828 में लिखा था 'मुझे यह कहते हुए दुःख होता है कि हिन्दुओं की वर्तमान धर्म व्यवस्था उनके राजनीतिक हितो का संवर्धन नहीं कर सकती। मेरे विचार से उनके राजनीतिक लाभ और सुख चैन के लिए यह आवश्यक है कि उनके धर्म में कोई परिवर्तन हो। राजा राममोहन राय अपने शैक्षिक, धार्मिक और सामाजिक सुधारो के द्वारा भारतीयों को राजनीतिक सुधार के लिए तैयार करना चाहते थे। राजा राममोहन राय की यह भूमिका अनेक अंग्रेजों को अच्छी नहीं लगती थी। उन्होंने देश में ब्रिटिश शासन की स्थापना के लिए ईश्वर को धन्यवाद दिया था।

राजा राममोहन राय ने इस बिल के पास होने में गहरी दिलचस्पी ली। उन्होंने कई बार हाऊस ऑफ कामन्स की कार्यवाही देखी और अपने मित्रों को यहां तक कहा कि यदि रिफार्म बिल पास नहीं हुआ तो वे इग्लैंड से अपने सम्बन्ध तोड़ लेगें किन्तु जब रिफार्म बिल पास हुआ तब वे वहां उपस्थित नहीं थे। उन्होंने इसे इग्लैंड के लिए ही नहीं अपितु समूचे संसार की मुक्ति का संकेत समझा था। स्वतन्त्रता के सिद्धान्त के वैयक्तिक तथा सामूहिक जीवन में प्रयोग का अनिवार्य परिणाम है कि इसे राजनैतिक क्षेत्र में भी लागू किया जाए।

राजा राममोहन राय गोखले, तिलक, सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी आदि की भाँति एक राजनीतिज्ञ नहीं थे, यद्यपि देश–विदेश की राजनीति में उनकी गहरी दिलचस्पी थी और उन्हें यूरोप की विशेष रूप से इग्लैंड की राजनीति का अच्छा ज्ञान था। भारत के राजनीतिक जागरण में उन्होंने जो योगदान दिया, उसे भुलाया नहीं जा सकता। भारत में सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना जगाने के कारण ही उन्हें 'नये भारत का सन्देशवाहक' कहा जाता है। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने उन्हें 'भारत में सवैंधानिक आन्दोलन का जनक' कहा था। राजा राममोहन राय से पूर्व सम्पूर्ण देश की तो क्या बात कलकत्ता में भी कोई राजनीतिक जीवन नहीं था। जनता में अपने नागरिक अधिकारों के प्रति कोई विचार नहीं था और विदेशी हुकूमत के सामने अपनी शिकायते रखने की बात कोई सोचता भी नहीं था। लेकिन ऐसे प्रारम्भिक काल में भी राजा राममोहन राय ने आश्चर्यजनक रूप से ओजपूर्ण राजनीतिक विचार व्यक्त किए और अपने राजनीतिक आन्दोलन को वे शासन सत्ता के केन्द्र तक ले गए उन्होंने देश

की राजनीति के विभिन्न पक्षों पर ध्यान दिया और समस्याओं का बुद्धिमत्तापूर्ण निदान प्रस्तुत किए।

स्वाभाविक रूप से राजा राममोहन राय के स्वतन्त्रता–प्रेम में भारत और साथ–साथ ही सारा संसार आ जाता था। 1827 के जूरी कानून का विरोध करते हुए, जिसमें न्याय पद्वति के अन्दर धार्मिक भेदभाव का प्रवेश किया गया था, उन्होंने लिखा था –''यदि भारत में आयरलैण्ड का एक–चौथाई ज्ञान और कर्मशक्ति होती तो वह अपनी दूर स्थिति, अपने ऐश्वर्य और जनसंख्या की बदौलत या तो ब्रिटिश साम्राज्य का मित्र और एक उपयोगी और लाभकारी अंग हो सकता था या उसका प्रबल शत्रु।''

वाल्टेयर, मांटेस्क्यू और रूसों की भांति राजा राममोहन राय को स्वतन्त्रता के आदर्श से उत्कृष्ट प्रेम था। वैयक्तिक स्वतन्त्रता पर प्रबल आग्रह के साथ निजी वार्ता में वे प्राय राष्ट्रीय मुक्ति के आदर्शों की भी चर्चा किया करते थे। उनका कहना था कि स्वतन्त्रता मानव मात्र के लिए एक बहुमूल्य वस्तु है किन्तु राष्ट्र के लिए भी आवश्यक हैं 11 अगस्त, 1821 को उन्होंने 'कलकत्ता जनरल' के सम्पादक जे. एस. बर्किंघम को लिखे अपने पत्र में विश्वास प्रकट किया था कि अन्तगोत्वा यूरोपीय राष्ट्र तथा एशियाई उपनिवेश निश्चय ही अपनी स्वाधीनता प्राप्त कर लेगें। राजा राममोहन राय को स्वतन्त्रता की मांग से गहरी सहानुभूति थी। 1821 में राज फर्डीनेण्ड द्वारा जनता को संविधान दिए जाने के उपलक्ष में राजा राममोहन राय ने एक सार्वजनिक भोज का आयोजन किया और 1830 की क्रान्ति से उनके ह्रदय को संतोष पहुँचा। 1827 में उन्होंने जूरी–जूरी एक्ट का विरोध किया।

भारत में 'राजस्व और न्यायिक व्यवस्था' नामक अपनी पुस्तिका में उन्होंने निर्भीकता से न्यायिक प्रशासन का मूल्यांकन किया। राजनीतिक क्षेत्र में इसने प्रेस पाश्चात्य पद्वति को मान्यता दी और राजनीतिक क्षेत्र में इसने प्रेस स्वतन्त्रता, नारी–अधिकार, कार्यपालिका से न्यायपालिका के पृथक्करण आदि की मांगो का रूप धारण किया। उन्होंने पंडित शिव प्रसाद शर्मा के नाम से एक लेख लिखा जो 'ब्राह्यनिकल मेगजीन' नामक पत्रिका में 15 नवम्बर 1823 को प्रकाशित हुआ। राजा राममोहन राय की राजनीति संकीर्ण नही थी। उदाहरण स्वरूप जब आस्ट्रिया वासियों ने नेपल्स नगर की स्वतन्त्रता को समाप्त कर दिया, तो वह इतने दुःखी हुए कि उनके एक मित्र ने उन्हे एक पार्टी दी थी, वह उसमें नहीं गए। जब उन्होंने स्पेन में वैधानिक शासन की स्थापना की बात सुनी तो उन्होंने टाऊन हाल में एक सार्वजनिक भोज दिया। 1830 की फ्रांसीसी राज्य क्रान्ति की खबर पाकर वह इतने जोश में आ गए कि तीव्र वेदना से पीड़ित होने के बावजूद उन्होंने यह जिद्द की कि मैं जाकर तिरंगे से मण्डित फ्रांसीसी जहाजों को देखूगां तो उस समय टेबल नर्खाडा में मौजूद थे।

राजा राम मोहन राय की निम्नलिखित कृतियों से हमें उनके राजनीतिक विचारों का पता चलता है :–

1. हिन्दु–उत्तराधिकार–कानून के अनुसार स्त्रियों के प्राचीन अधिकारों पर कतिपय आधुनिक अतिक्रमण सम्बन्धी टिप्पणियों (1822)
2. प्रेस–नियमन के विरूद्ध सर्वोच्च न्यायालय एवं सम्राट को याचिका (1823)
3. अंग्रेजी शिक्षा पर लार्ड हम्हर्स्ट के नाम एक पत्र (1823)
4. ईसाई जनता के नाम अन्तिम अपील (1823)
5. युरोपवासियों को भारत में बसाने सम्बन्धी विचार (1831)
6. प्राचीन एवं आधुनिक सीमाओं का संक्षिप्त विवरण तथा भारत का इतिहास(1832)
7. भारत की न्यायिक एवं राजस्व–व्यवस्था आदि प्रश्नोत्तर (1832)
8. पत्र एवं भाषण आदि ।21

राजा राममोहन राय ने अपने राजनीतिक विचार किसी सिद्धान्त या परिकल्पना के रूप में प्रकट नहीं किए थे। उनके समक्ष उनके समय की जो समस्याएं आई वह उन पर विचार प्रकट करते रहे। एक समाज सुधारक के रूप में जिन समस्याओं से उन्हें जूझना पड़ा उनके विषय में भी उन्होंने जो विचार प्रकट किए उन सबका समावेश करके उनके राजनीतिक विचारों को यहां समेटने का प्रयास किया गया है। वह भारत में स्वराज्य के अग्रदूत नहीं थे, वस्तुत वे भारतीय पुनर्जागरण के अग्रदूत थे।

संदर्भ ग्रंथ

1. सौमयेन्द्र नाथ टैगोर, राजा राम मोहन राय, पृश्ठ 57
2. ताराचन्द, भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास, खण्ड–।।, ग्रह मंत्रालय।
3. डा. विष्वनाथ प्रसाद वर्मा, भारतीय राजनीतिक चिन्तन, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।
4. प्रताप सिंह, आधुनिक भारत का आर्थिक और सामाजिक इतिहास, रिसर्च पब्लिकेषन।
5. डा. योगेन्द्र कुमार षर्मा, भारतीय राजनीति विचारक, पृश्ठ सं. 97